कोलम्बिया फाउँडेशन सी० सै० स्कूल

डी ब्लॉक विकासपुरी नई दिल्ली 110 018

वन्दना संस्कृत-श्लोका: (कक्षा पंचम-षष्ठम्, कक्षा सप्तम-अष्टम)

1. वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ → हे (वक्रतुण्ड) टेढ़ी सूँड वाले, (महाकाय) विशाल शरीर वाले, (कोटिसूर्यसमप्रभ) करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाले, (देव गणेश भगवान) आप (सर्वदा) हमेशा (मे) मेरे (सर्वकार्येषु) सभी कार्यों को (निर्विघ्नं) निर्विघ्न (कुरु) पूरा करें।

2. या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

अर्थ → जो देवी सभी प्राणियों में विद्या रूप में विराजमान हैं, उस देवी को नमस्कार है, नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।

3. त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव-देव ॥

अर्थ → हे परमेश्वर! आप ही हमारे माता हैं,

और आप ही हमारे पिता हैं, आप ही हमारे माई - बन्धु हैं और आप ही विद्या हैं और आप ही धन हैं। हे देवों के देव, आप ही हमारे सब कुछ हैं।

विद्या - प्रशंसा

4. सुन्दरोऽपि सुशीलोऽपि कुलीनोऽपि महाधनः।
शोभते न विना विद्यां विद्या सर्वस्व भूषणम॥

अर्थ → सुन्दर, सुशील, कुलीन और बहुत धनवान होने पर भी कोई विद्या के बिना शोभा नहीं पाता, (क्योंकि) विद्या ही सबका भूषण है।

5. पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तगतं धनम्।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद् धनम॥

अर्थ → पुस्तकों में लिखी हुई विद्या और दूसरे के हाथ में गया हुआ धन समय आने अथवा जरूरत पड़ने पर सहायता नहीं करते हैं।

6. सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

अर्थ → सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ। सुख चाहने वाले को विद्या छोड़ देनी चाहिए और विद्या चाहने वाले को सुख छोड़ देना चाहिए।

7. विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥

अर्थ → विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से योग्यता आती है। योग्यता से व्यक्ति धन प्राप्त करता है, धन से धर्म और उसके बाद सुख प्राप्त करता है।

8. अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतो सुखम्॥

अर्थ → आलसी को विद्या कहाँ? बिना विद्या के धन कहाँ? बिना धन के मित्र कहाँ?

और बिना मित्र के सुख कहाँ प्राप्त होता है?

9. अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात् ॥

अर्थ → हे सरस्वती देवी। आपका खजाना अद्भुत है जो खर्च करने पर वृद्धि को प्राप्त होता है और संचय करने पर नष्ट हो जाता है।

10. येषां न विद्या न तपो न दानम्।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अर्थ → जिस व्यक्ति के पास न विद्या है, न तप करते हैं, न दान, न ज्ञान, न सुव्यवहार, न गुण, न धर्म करते हैं, वे संसार में भार के समान हैं, मनुष्य के रूप में मानों पशु ही घूम रहे हैं।